647510 **BRSHinFC507B** **Seat No :_____**

B.R.S. Semester - 5 (*CBCS*) Examination

Oct/Nov. - 2022(Old Course)

HINDI LITERATURE AND LANGUAGE CORRECTION (FOUNDATION-7)

Time: 2:30 Hours **Marks: 70**

Instructions:

1. All questions are compulsory.
2. Figures to the right indicate marks.

प्रश्न.-१ निम्नांकित प्रश्नों के सूचनानुसार उत्तर दीजिए। (१४)

१. अनुवाद का कोई गुण लिखिए।
२. जो पुस्तकों की समीक्षा करता है- शब्द समुह के लिए एक शब्द दीजिए।
३. चंद्रशेखर शब्द किसके लिए प्रयुक्त है।
४. आवेदन पत्र के लिए सबसे महत्व पूर्ण क्या है?
५. अनुवाद के प्रकारों में से एक प्रकार का नाम लिखें।
६. कृपण शब्द का विरूध्धार्थी शब्द दीजिए।
७. तीलोतमा शब्द का शुध्ध रूप लिखें।
८. अग्रज शब्द का विरूध्धार्थी शब्द दीजिए।
९. सामिष शब्द का विरूध्धार्थी शब्द दीजिए।
१०. जिसकी बाहुए दीर्ध है- शब्द समुह के लिए एक शब्द दीजिए।
११. द्विज शब्द का समानार्थी शब्द दीजिए।
१२. ग्रुतगमन करने वाला- शब्द समुह के लिए एक शब्द दीजिए।
१३. जिसके पारा देखा जा सके। शब्द समुह के लिए एक शब्द दीजिए।
१४. जो युध्धमें स्थिर है- एक शब्द दीजिए।

प्रश्न.-२ अनुवाद शब्द का अर्थ, व्याख्या लिखकर अनुवाद की उपयोगिता लिखें। (१४)

अथवा

प्रश्न.-२ एक अच्छे अनुवाद के गुण लिखें।

प्रश्न.-३ निम्नांकित में से किन्हीं तीन पर टिप्पणी लिखें। (१४)

१. अनुवाद के चार प्रकार लिखे।
२. अच्छे पत्र की विशेषता लिखे।
३. काव्यानुवाद की समस्याए लिखे।
४. तत्सम्-तदभव् शब्द समुह।
५. संक्षेपण के गुण।

प्रश्न.-४ "एकलव्य-स्कूल"- दिल्ली के लिए हिन्दी शिक्षक के पद हेतु- आवेदन पत्र का नमूना तैयार कीजिए। (१४)

अथवा

प्रश्न.-४ अवध प्रकाशन-उत्तर प्रदेश से अंग्रेजी- और विज्ञान की किताबें मंगवाने हेतू पत्र-तैयार कीजिए। (१४)

प्रश्न.-५ निम्नांकित परिच्छेद का संक्षेपण कीजिए।

भारत का पर्वतीय सौंदर्य अलौकिक है। उत्तर दिशामें दूर-दूर तक पर्वत श्रृंखलाए फैली हुई है। उनकी गगनचुम्बी चोतियों पर बादल र्मडराते रहते हैं तथा बर्फ गिरती रहती है। विविध मौसम गर्मी, शरद, वर्षा एक ही साथ चलते रहते है। नदियों के उदगम स्त्रोंतो की कल-फल ध्वनि गूंजती रहती है। विभिन्न उपयोगी जडी बूटिर्या इस क्षेत्रमें उपलपध है। उनके जीव जन्तू इन पर निवास करते हैं। ऋषि-मुनि वहीं पर एकान्त साधना में मग्न रहते है। इधर-उधर उगी हुई धास तथा देवदारू आदि के लम्बे-लम्बे वृक्ष इस प्रदेशमें हरितमा व्याप्त करते हैं। प्रात: एवं सायकाल सूर्य पर्वत श्रृंगो पर स्वर्णिम, गुलाबी, लाल रंग विकीर्ण कर प्रकृति सुंदरी को सजाता है। रात्रि में चन्द्रमा अवनी शुभ, शीतल तथा मनोहारिणी चांदनी से प्रकृति नारी के तन को श्रृंगारित करता है। ओस की बूंदे उसे विविध अलंकार पहनाती है। यह सब देखकर ऐसा लगता है। मानो इस रूपमें इश्वरने अपनी सुरूचि का परिचय दिया है।

****